गाँधीमय गुरुजी

पुस्तक लोकार्पण एवं विमर्श

भारत की संस्कृति ज्ञान केन्द्रित संस्कृति रही है। यह प्राचीनकाल से अद्यावधि पर्यन्त मौखिक रूप से संवादात्मक शैली में निरन्तर प्रवाहित होती रही है। यहाँ अनेक ऋषि-महर्षि इसके पुरोधा रहे हैं। श्री रवीन्द्र शर्मा गुरुजी भी इसी परम्परा के संवाहक व्यक्तित्व हैं। इनके द्वारा भारतीय समाज, संस्कृति, कला, दर्शन, प्रौद्योगिकी आदि विभिन्न विषयों को जनसामान्य के समक्ष अत्यधिक सरल रूप में प्रस्तुत किया गया। इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा इनके द्वारा प्रस्तुत विषयों के महत्त्व को ध्यान में रखते हुए इन्हें पुस्तकाकार रूप में प्रकाशित करने की योजना बनायी गयी। इसी क्रम में भारत विद्या प्रयोजना प्रकल्प के अन्तर्गत भारत गाथा शृंखला का शुभारम्भ किया गया।

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के भारत विद्या प्रयोजना प्रकल्प (फेज़-1) द्वारा दिनांक 06 सितम्बर, 2024 (शुक्रवार) को भारत गाथा शृंखला के अन्तर्गत प्रकाशित तीन पुस्तकों (भिक्षावृत्ति, प्रौद्योगिकी, घर एवं वास्तु) का विमोचन एवं विमर्श कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम के अध्यक्ष के रूप में श्री सुरेश सोनी, प्रखर विचारक एवं चिन्तक, सारस्वत अतिथि के रूप में प्रो. सुधीर कुमार, आचार्य, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़, विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री आशीष गुप्ता, संस्थापक, जीविका आश्रम, इन्द्राना, मध्यप्रदेश, डॉ. सच्चिदानन्द जोशी, सदस्य सचिव, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, प्रो. सुधीर लाल, अध्यक्ष, कलाकोश संविभाग, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र एवं अन्य विद्वत्जनों की गरिममयी उपस्थिति रही। भारतीय परम्परा के अनुसार कार्यक्रम का आरम्भ मंगलाचरण से हुआ। मंगलाचरण कलाकोश संविभाग के सदस्यों ने प्रस्तुत किया। डॉ. सच्चिदानन्द जोशी द्वारा मंचस्थ अतिथि एवं सुधीजनों का अभिनन्दन किया गया। इसके अनन्तर भारत गाथा शृंखला के सम्पादक श्री आशीष गुप्ता द्वारा 'भारत विद्या प्रयोजना' के अन्तर्गत प्रायोजित 'भारत गाथा शृंखला' की पृष्ठभूमि एवं भावी परियोजनाओं की रूपरेखा प्रस्तुत की गयी। इन्होंने कहा कि श्री रवीन्द्र

शर्मा गुरुजी अपने वक्तव्यों में यह सन्देश देते थे कि व्यक्ति को सर्वदा निरपेक्ष, संकल्प रहित, निर्लिप्त एवं प्रकृति के साथ तादात्म्य स्थापित करके जीवन जीना चाहिए। गुरुजी अपने विचार जनसामान्य के समक्ष मौखिक रूप से अभिव्यक्त करते थे। इनके चिन्तन के विषय एवं विचाराभिव्यक्ति की शैली दोनों अद्भुत थी। इनके द्वारा गूढ़ विषयों को भी कथा के माध्यम से अत्यधिक सरल रूप में प्रस्तुत किया जाता था। इनके चिन्तन को अकादमिक स्तर पर प्रस्तुत करने हेतु इनके वक्तव्यों को पुस्तकाकार देना आवश्यक है। भारत गाथा, भारत कथा, आदिलाबाद संवाद आदि शृंखलाएं इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु किए गए प्रयास हैं। भारत गाथा शृंखला के अन्तर्गत गुरुजी द्वारा दिए गए अल्पकालिक वक्तव्यों को प्रकाशित किए जाने की परियोजना है। इसके अन्तर्गत गुरुजी के वक्तव्यों के दस विषयों को चिह्नित कर उन्हें लगभग दस भागों में प्रकाशित किया जाएगा। इसके अन्तर्गत भिक्षावृत्ति, प्रौद्योगिकी तथा घर एवं वास्तु नामक तीन भाग क्रमश: प्रकाशित हो चुके हैं।

इसके अनन्तर मंचस्थ अतिथिगणों द्वारा भारत गाथा शृंखला के अन्तर्गत प्रकाशित भिक्षावृत्ति, प्रौद्योगिकी तथा घर एवं वास्तु नामक पुस्तकों का लोकार्पण किया गया तथा डॉ. सच्चिदानन्द जोशी द्वारा सम्मानीया अम्मा जी श्रीमती राजश्री शर्मा (श्री रवीन्द्र शर्मा गुरुजी की धर्मपत्नी) का सम्मान एवं अभिनन्दन किया गया। इसके पश्चात् डॉ. सच्चिदानन्द जोशी द्वारा अपना विशिष्ट वक्तव्य प्रस्तुत किया गया। इन्होंने भारतीय ज्ञान परम्परा की बात करते हुए कहा कि यह भारतीय समाज के जन-जन में व्याप्त है। इसे भारतीय समाज के गम्भीर अध्ययन से जाना जा सकता है। हमें वर्तमान में भारतीय ज्ञान परम्परा के लिए प्रयुक्त शब्द 'इण्डियन नोलेज ट्रेडिशन' को सन्दर्भ एवं अर्थ की दृष्टि से जानने की आवश्यकता है। यह शब्द औपनिवेशिक विचारधारा से प्रभावित परिलक्षित होता है। भारतीय ज्ञान शाश्वत, नित नूतन एवं चिरन्तन है। इसका आधार एक वैज्ञानिक अवधारणा है। इस परम्परा में सिद्धान्त एवं व्यवहार दोनों में एकरूपता दृष्टिगत होती है। श्री रवीन्द्र शर्मा गुरुजी ने जो सामाजिक अध्ययन किया एवं उसका अपने व्यावहारिक जीवन में अनुभव किया, उसी के आधार पर अपने विचार प्रस्तुत किए। हमें उनके विचारों को अपने व्यावहारिक जीवन में आत्मसात् करने की आवश्यकता है। आज का यह

कार्यक्रम हमारे लिए अतीव महत्त्वपूर्ण है क्योंकि हमें इसके माध्यम से जीवन की नई दृष्टि प्राप्त होगी। इसके अनन्तर कार्यक्रम के सारस्वत अतिथि प्रो. सुधीर कुमार द्वारा अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया गया। इन्होंने भारतीय शिक्षा की चर्चा करते हुए कहा कि शिक्षा में उच्च, उच्चतर, माध्यमिक, उच्च माध्यमिक आदि स्तरों पर भेद करना अव्यावहारिक एवं अनुपयोगी है क्योंकि शिक्षा अविभाज्य है। इन्होंने कहा कि पाश्चात्य शब्दावली का भारतीय परिप्रेक्ष्य में प्रयोग अव्यावहारिक है। जैसे- संस्कृति एवं मन्त्रालय(मन्त्रों का आलय) शब्दों के भारतीय परिप्रेक्ष्य में विशेष अर्थ हैं। इनके लिए प्रयुक्त किए जाने वाले कल्चर एवं मिनिस्ट्री उस अर्थ के द्योतक नहीं हैं। लोक एवं शास्त्र की चर्चा करते हुए इन्होंने कहा कि हमारे यहाँ इन दोनों में परस्पर द्वन्द्व नहीं है। श्री रवीन्द्र शर्मा गुरुजी की विषय प्रतिपादन शैली की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि वे सूत्र रूप में बोलते थे। उनके सूत्रों पर कारिका, टीका, भाष्य एवं व्याख्या आदि किए जा सकते हैं। इनका दर्शन विनोबा भावे, दत्तोपंत ठेंगड़े, दीनदयाल उपाध्याय, विनायक दामोदर सावरकर, श्री अरविन्द, रवीन्द्र नाथ टैगोर, आनन्द कुमारस्वामी आदि के दर्शन से अभिन्न है। हमें इन सभी को पाठशाला स्तर (मानस निर्मिति काल) पर पाठ्यक्रम में सम्मिलित किए जाने की आवश्यकता है। गुरुजी हमारी सभ्यता एवं संस्कृति के बीजों के संकलन एवं संरक्षण पर बल देते हैं। वर्तमान समय हमारी सभ्यता का प्रलय प्रतीत होता है, अत: हमें हमारी सभ्यता एवं संस्कृति के बीजों के संरक्षण की आवश्यकता है। बीजों से ही पुन: सृष्टि की जा सकती है। सृष्टि, स्थिति, विकास एवं प्रलय का यह एक चक्रात्मक क्रम है। हमारी ज्ञान परम्परा के मूल में पुरुषार्थ है और दूसरी मुक्ति है। गुरुजी ने दर्शन की व्याख्या अत्यधिक सरल शब्दावली में की है। इनका कथन है कि एक ओर सृष्टि है, दूसरी ओर परमार्थ है, जिसे मोक्ष अथवा स्व स्वरूप या ब्रह्मरूप भी कहा जा सकता है। इनके मध्य में एक डिजाईन है, जिसे माया कहा जाता है। इनका यह दर्शन शंकराचार्य, मध्वाचार्य एवं रामानुजाचार्य से अभिन्न है। गुरुजी के अनुसार ग्राम की चर्चा करते हुए इन्होंने कहा कि ग्राम वह है, जहाँ सबसे पहले आपके लिए आहार की व्यवस्था की जाए और आहार के साथ आपके गौरव को सुनिश्चित किया जाए और तीसरा, फिर उस गाँव में कला हो, विज्ञान हो, अध्यात्म हो, प्रकृति से प्रेम हो। कला, कलाकार एवं कलाकृति विषयक चिन्तन

करते हुए गुरुजी ने कहा है कि कलाकार वह है, जिसने अपने उपकरणों के माध्यम से सृष्टि का प्रतिबिम्बन किया है। कलाकार के लिए सम्पूर्ण सृष्टि ही उसका कैनवास होती है। भारत में प्रत्येक कारीगर एक कलाकार है। शिक्षण के विषय में चर्चा करते हुए गुरुजी कहते हैं कि हमारे यहाँ शिक्षण का माध्यम गुरु-शिष्य का संवाद एवं शिष्य का प्रत्यक्ष अनुभव रहा है। इसके उदाहरण रूप में प्रश्नोपनिषद्, केनोपनिषद् आदि को देखा जा सकता है। गुरुजी के अनुसार हमारी संस्कृति में तीन प्रकार की वृत्तियाँ रही हैं- कर्मवृत्ति (जड से चेतन बनाने वाली), वैश्यवृत्ति (चेतन से चेतन बनाने वाली), भिक्षावृत्ति (व्यक्ति को निर्लिप्त बनाने वाली)। गुरुजी के वक्तव्यों के विशिष्ट विषयों को आधार बनाकर भारत गाथा शृंखला के रूप में निम्न तीन भागों में प्रकाशित किया गया है-

1. **भिक्षावृत्ति-** गुरुजी के अनुसार भिक्षावृत्ति का स्वरूप वर्तमान समाज में प्रचलित स्वरूप से भिन्न है। इनके अनुसार हमारी दैनिक दिनचर्या में सहयोगी कारीगर, लोकशिक्षक, संगीतकार, ब्रह्मचारी, कथावाचक, माली आदि को स्वेच्छा से सम्मानपूर्वक पारितोषिक रूप में कुछ देना भिक्षा है।
2. **प्रौद्योगिकी-** गुरुजी के अनुसार प्रौद्योगिकी को समझने हेतु उद्योग एवं प्रोद्योग को समझने की आवश्यकता है। प्र का अर्थ है श्रेष्ठ, उत का अर्थ है उठा हुआ, योग का अर्थ है जुड़ाव अर्थात् प्रौद्योगिकी का अभिप्राय है-जो आपको श्रेष्ठता से जोड़े। प्रौद्योगिकी के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला 'टेक्नोलॉजी' शब्द उपयुक्त नहीं है। इससे भारतीय प्रौद्योगिकी की संकल्पना का प्रतिबिम्बन नहीं होता। प्रौद्योगिकी का स्वदेशी एवं सर्वोदयी होना आवश्यक है।
3. **घर एवं वास्तु-** गुरुजी के अनुसार घर वह है, जो आपको आरोग्य दे, आर्थिक सहायता प्रदान करे, जो अध्यात्म की ओर उन्मुख करे, जो आपको समाज की ओर उन्मुख करे, लोकोन्मुखी करे।

इस प्रकार गुरुजी एक व्यक्ति नहीं, विचार हैं, जो हमें भारतीयता का बोध करवाते हैं।

सुझाव-

- भारतगाथा शृंखला के प्रत्येक भाग में लगभग चार-पाँच पृष्ठों में गुरुजी के बीज शब्दों की व्याख्या की जाए।
- गुरुजी के दर्शन का अंग्रेजी में अनुवाद ऐसे व्यक्ति से करवाया जाए, जिससे साध्य एवं साधन की शुचिता बनी रहे।

इसके अनन्तर श्री सुरेश सोनी द्वारा अध्यक्षीय उद्बोधन दिया गया। इन्होंने कहा कि गुरुजी को सुनने से ही जीवन की दिशा बदलती है, दृष्टि बदलती है, मन बदलता है। कबीर कहते हैं कि 'तु कहता कागज की लेखी मैं कहता आँखन की देखी'। गुरुजी ने जो कहा है, वह आँखों की देखी है। भारत की जीवनयात्रा गुरुजी के शब्दों में अभिव्यक्त हो रही है। धर्मपाल जी के कथन को उद्धृत करते हुए इन्होंने कहा कि भारत के मूल को समझने के तीन मार्ग हैं-

1. वेदों से लेकर वर्तमान पर्यन्त जितना भारत का वाङ्मय है, उसका गहनता से अध्ययन किया जाए। इससे आपको भारत के दर्शन, मनोविज्ञान, जीवनमूल्य, समाज की जीवनयात्रा, इतिहास, परम्परा आदि के विषय में कुछ आभास मिल सकता है।
2. भारत को जानने की बहुत लोगों ने कोशिश की है और उन्होंने जो भी जाना है, उसके विषय में जो कुछ लिखा है, जैसे ह्वेनसांग की डायरी, इत्सिंग की डायरी आदि, इनका अध्ययन कर भारत के विषय में कुछ जाना जा सकता है।
3. भारत के समाज का जो प्रवाह है, जो सामाजिक ताना-बाना है, उसके जो अन्तर्सम्बन्ध हैं, उनको समझिए।

उपर्युक्त मार्गों में से हमें तृतीय मार्ग रवीन्द्र शर्मा गुरुजी के रूप में सहज उपलब्ध होता है। गुरुजी सहज एवं सरल रूप में ही हमें प्राचीन एवं आधुनिक भारत के अन्तर का बोध करवाते हैं। गुरुजी के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति की मुख्य रूप से तीन आवश्यकताएं हैं-सुरक्षा, आहार एवं उसके निवास की व्यवस्था। सर्वत्र सभी प्राणियों की ये आवश्यकताएं पूर्ण हो सकती हैं। इनके लिए उन्हें इधर-उधर भाग-दौड़ करने की आवश्यकता नहीं है। भारतीय परम्परा में इन आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए ग्राम की संरचना की गयी है। जब व्यक्ति इन मूलभूत

आवश्यकताओं से निश्चिन्त हो जाता है, तब वहाँ से कला, संस्कृति का जन्म होता है। जीवन ठहरकर जीने के लिए होता है। आज की सभ्यता ने पूरी की पूरी मानव जाति को संचारी बना दिया है। संचारी जाति का न तो कोई संगीत होता है, न जीवनमूल्य होते हैं और न ही कोई कला होती है। ज्ञान के विषय में चर्चा करते हुए इन्होंने कहा कि ज्ञान न तो नया होता है और न पुराना होता है, ज्ञान तो ज्ञान ही होता है। युगानुसार उसे समझने हेतु उसका केवल भाष्य किया जाता है। हमारी ऋषि परम्परा में कभी यह दावा नहीं किया गया कि मैं कुछ नया कह रहा हूँ। गुरुजी के अनुसार शास्त्र एवं हमारी सामाजिक व्यवस्था में एकात्मता का प्रतिपादन करते हुए इन्होंने कहा कि गुरुजी ने शास्त्र नहीं पढ़े, उन्होंने समाज पढ़ा लेकिन समाज पढ़कर उनको जो लगा, वह बोला। लेकिन हम देखते हैं कि उनके वक्तव्य में हमारे शास्त्रों में उल्लिखित सभी तत्त्व समाहित हैं। भारतीय संस्कृति के विषय में विचार करने पर हमें यह परिलक्षित होता है जो शंकराचार्य कह रहे हैं कि जीव और ब्रह्म एक हैं, इस विषय में एक गाँव का अनपढ़ व्यक्ति भी सूत्र रूप में कह देता है कि ईश्वर सब जगह है। उसे इस सन्दर्भ में न ब्रह्मसूत्र पढ़ने की जरूरत है, न गीता और न ही उपनिषद् पढ़ने की जरूरत है। एक अनपढ़ व्यक्ति को भी यह शास्त्र का ज्ञान किस प्रकार हुआ, हमें इसकी निरन्तरता को समझने की आवश्यकता है। हमारे यहाँ एक क्रम परम्परा रही कि जो मूल तत्त्व है, वह अनुभूति का स्तर है और वही अनेक रूपों में व्यक्त हुआ है। यह मूल तत्त्व की अनुभूति जब शब्दों में अभिव्यक्त हुई तो उसी को भारतीय दर्शन कहा गया। इसी के आधार पर भारत की एक वैश्विक दृष्टि बनी। यही दृष्टि हमारे कला, दर्शन एवं संस्कृति में प्रतिबिम्बित होती है। प्रौद्योगिकी के सन्दर्भ में बात करते हुए इन्होंने कहा कि छोटी तकनीक मालिक बनाती है, बड़ी मजदूर बनाती है। बद्रीप्रसाद टोलरिया के अनुसार जिस समाज में मालिकों की संख्या कम होगी और मजदूर की संख्या अधिक होगी तो वहाँ स्थिरता के अभाव में निश्चित रूप से क्रान्ति होगी। इन्होंने कहा कि हमें हमारी सभ्यता के बीज बचाकर रखने चाहिए। क्योंकि जब पतन आता है तो वह अपने तार्किक अन्त तक जाता है। ऐसी परिस्थिति में यह सभ्यता इतिहास के पन्नों में खत्म हो जाएगी। यदि जीवन्त कुछ उदाहरण रह गए तो सभ्यता का पुनरुत्थान होगा।

सुझाव-

देश में अनेकानेक स्थानों पर आदर्श केन्द्रों की स्थापना की जाए, जहाँ हमारे शास्त्र एवं अनुप्रयोग की एकात्मता प्रत्यक्ष रूप से देखने को मिले।

इसके अनन्तर प्रो. सुधीर लाल द्वारा अतिथियों का आभार एवं धन्यवाद ज्ञापन किया गया।

बाएँ से दाएँ – सुश्री आकृति ठाकुर, श्री रिपुञ्जय ठाकुर, डॉ. इन्द्रेश कुमार शुक्ल, डॉ. पूनम यादव, श्री प्रियंकर मिश्र, सुश्री स्रष्टि असाटी

बाएँ से दाएँ- प्रो. सुधीर लाल, डॉ. सच्चिदानन्द जोशी, श्री सुरेश सोनी, श्रीमती राजश्री शर्मा, प्रो. सुधीर कुमार, श्री आशीष गुप्ता

संस्कृति मंत्रालय
Ministry of Culture
Government of India
इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र
गांधीमय गुरुजी
(श्री रवीन्द्र शर्मा 'गुरुजी' के कार्यों का प्रलेखन और संकलन)
पुस्तक लोकार्पण एवं विमर्श
IGNCA